



## वैन गॉग की पेंटिंग की सुरक्षा के प्रयास

वसंत वैन गॉग ने 1888 में सूरजमुखी की सात मशहूर पेंटिंग्स बनाई थीं। मगर अब इनमें से 4 के रंग फीके पड़ रहे हैं। हाल ही में इटली के पेरुजुया विश्वविद्यालय की लेटिज़िया मोनिको ने इन पेंटिंग्स का विश्लेषण करके एक मानचित्र तैयार किया है जिसमें बताया गया है कि पेंटिंग के कौन-से हिस्से सबसे ज़्यादा जोखिम में हैं।

दरअसल, ये 4 सूरजमुखी पेंटिंग्स जिन रंगों से बनाई गई हैं वे क्रोम येलो कहलाते हैं। इन रंगों का आविष्कार उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में हुआ था। रंगों का यह समूह क्रोमियम और लेड से निर्मित होता है। वैन गॉग ने इन क्रोम येलो रंगों के अलग-अलग मिश्रण बनाए और इन्हें एक के बाद एक परतों में इस्तेमाल करके सूरजमुखी के रंगों और छटाओं की बारीकियां पैदा की थीं।

मगर विशेषज्ञों के बीच इस बात पर बहस चलती रही है कि क्या आज जो छटाएं हमें दिखती हैं, वे वैन गॉग ने बनाई थीं या रंगों के रासायनिक विघटन के कारण दिखने लगी हैं। सवाल यह भी था पेंटिंग के कौन-से हिस्से इस तरह के विघटन के ज़्यादा शिकार हुए हैं। इस पर अनुसंधान करते हुए मोनिको और साथियों ने पहले यह दिखाया था कि गंधक-प्रचुर क्रोम येलो में इस तरह के विघटन की प्रवृत्ति ज़्यादा होती है।

अब मोनिको के दल ने एक पोर्टेबल वर्णक्रम-मापी और एक्सरे स्कैनर विकसित किया है जिसकी मदद से उन्होंने एम्सटर्डम स्थित वैन गॉग संग्रहालय में रखी सूरजमुखी पेंटिंग्स का बारीकी से विश्लेषण किया है। इस विश्लेषण की मदद से उन्होंने इन पेंटिंग्स का एक नक्शा तैयार किया है जिसमें वे हिस्से दिखाए गए हैं जो सबसे ज़्यादा जोखिमग्रस्त हैं। उनके विश्लेषण से पता चलता है कि चिंहित हिस्सों का रंग प्रकाश के प्रति अधिक संवेदनशील है।

मोनिको के दल ने यह भी पाया कि पेंटिंग का कुछ लेड क्रोमेट (जो पीला होता है) हरे रंग के क्रोमियम ऑक्साइड में बदल गया है। इस परत के नीचे वाली परत के पीले रंग के साथ मिलकर अब यह ज़्यादा गहरा भूरा रंग बना रहा है। संभवतः वैन गॉग ने इतनी गहरी छटा देने का इरादा नहीं किया होगा।

सवाल है कि अब क्या किया जाए। मोनिको का कहना है कि जितनी क्षति हो चुकी है, उसके बारे में कुछ नहीं किया जा सकता। मगर पेंटिंग्स को और बिगड़ने से बचाने के उपाय ज़रूर किए जा सकते हैं। उनका कहना है कि इन पेंटिंग्स को तेज़ रोशनी से, खासकर हरी-नीली रोशनी से बचाना होगा क्योंकि ज़्यादातर क्षति इसी प्रकाश की वजह से होती है।

(स्रोत फीचर्स)